आखिर क्यों जा रही हैं मुस्लिम लड़कियां गैरों की तरफ...?

**Book Name: Binte Hawwa Irtidad Ke Dahane Par**

Language: Hindi

Hijri Date: 05 Muharram 1444 H

English Date: 04 August 2022 [Thursday]

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa ﷺ (India) or TNM Official

Any Query, contact us: 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://www.nizamemustafa.in/

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

## About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

## TNM OFFICIAL

“मुस्लिम लड़कियों और उनके वालिदैन के नाम  एक अहम पैग़ाम”

**“आखिर क्यों जा रही हैं मुस्लिम लड़कियां गैरों की तरफ ?”**

# बिन्ते हव्वा

## इरतिदाद के दहाने पर


सिब्तैन रज़ा महशर मिस्बाही


Published by:

**तहरीक निज़ामे मुस्तफा**

Supported by:

**AMO**

ABDE MUSTAFA OFFICIAL


NOORI MISSION MALEGAON

ROSHAN MUSTAQBIL

MISSION QADRI WELFARE SOCIETY

ILM KI RAUSHNI TRUST

ZIA UL HUDA INDIA

DARUL ULOOM ALVIYA QADIRIYA EDUCATIONAL & CHARITABLE TRUST

## इरतिदाद किसे कहते हैं ?:

पहले ये समझ लीजिये इरतिदाद किसे कहते हैं ? इरतिदाद इस्लाम धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म को अपना लेना कहलाता है। हमारे मुआशरे में दिन-ब-दिन मुस्लिम लड़कियों का गैरों के साथ भाग कर शादी करना और झूठे प्यार के लिए अपने मज़हब को छोड़ देना एक संगीन मसला बन चुका है। आये दिन सोशल मीडिया पर खबरें वायरल हो रही हैं। फुलां मुस्लिम लड़की स्कूल या कॉलेज के नाम पर किसी पार्क में अपने आशिक़ के साथ रंग रेलियां मनाते हुए दिखाई दी तो कहीं मुस्लिम लड़की स्कूटर, बाइक पर गैर मुस्लिम लड़कों के साथ लॉन्ग ड्राइव पर देखी गयी तो कहीं किसी हॉस्टल में पकड़ी गयी तो कहीं कोई लड़की किसी गैर मुस्लिम के साथ भाग गयी। ऐसी ख़बरें मां बाप पर बिजली बन कर गिरती हैं। मुआशरे में बेइज़्ज़ती और फिर लड़कियों का मज़हब ए इस्लाम को छोड़ना किसी अज़ाब से कम नहीं है क्यूंकि ऐसी हरकत की वजह से छोटी बहनों को रिश्ते नहीं आते हैं ज़िंदगियाँ तबाह हो जाती हैं। कॉलेजों में नोट्स , प्रोजेक्ट हासिल करने के लिए गैर-मुस्लिम लड़कों से नंबर लिए जाते हैं। धीरे -धीरे ताल्लुक़ात क़ायम होते हैं और फिर साथ साथ बर्थ डे मनाने, गिफ्ट का लेन देन , कॉलेज के टूर, कल्चरल प्रोग्राम, मुख्तलिफ दिनों में साथ में रहना ये सब ऐसे कैंसर का सबब बनते हैं अब ज़ाहिर सी बात है कि लड़का जब महंगे तोहफे दे रहा हो खाने घुमाने का खर्च उठा रहा हो तो वो ऐसे थोड़ी छोड़ने वाला है।

## भारत का मौजूदा मंज़र नामा:

वतन ए अज़ीज़ के मुख्तलिफ जिलों से खबरें आ रही हैं कि मुस्लिम लड़कियां, गैर मुस्लिम लड़कों के मोहब्बत के जाल में गिरफ्तार होकर अपना मज़हब तब्दील कर रही हैं और उन लड़कों के साथ शादी भी रचा रही हैं और आए दिन ऐसी खबरें अखबारों की ज़ीनत भी बन रही हैं इस हवाले से कुछ वाकियात सामने आए हैं जिनमें मुस्लिम लड़कियों के साथ इंतहाई बुरे सुलूक हुए हैं। इस सिलसिले में इस्लाम मुखालिफ तंज़ीमें मुकम्मल प्लानिंग के साथ मुस्लिम लड़कियों को टारगेट बनाने में लगी हुई हैं ऐसे हालात में मुस्लिम लड़कियों की हिफाज़त की ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। इरतिदाद की इस लहर के

पीछे काम करने वाली भयानक सोचें क्या क्या हैं? इसके खात्मे के लिए क्या किया जाना चाहिए? इस पर गौर करना ज़रूरी है मगर अफसोस अभी भी मुस्लिम तंज़ीमों ने जानने की कोशिश नहीं की।

## दुख्तरान ए मिल्लत का मौजूदा तर्ज़े अमल:

बिला शुबह कौम ए मुस्लिम यूरोपी तहज़ीब की जिस कदर आदी हो रही है इससे ना सिर्फ उनकी कौमियत एक तरह से खत्म हो रही है बल्कि दीन और मज़हब से बेगाना और बेज़ार भी हो रही है जिसका नतीजा यह है की जिन इज़्ज़तदार घरों में बहू-बेटियां बिना ज़रूरत कभी घर के बाहर कदम रखना भी हया के खिलाफ समझती थीं आज वह खुले आम बाज़ारों में चलती फिरती नज़र आ रही हैं जैसे देहात में जवान लड़के बिना रोक टोक लड़कियों के घर आते रहते हैं और शहरों में क्लासमेट, बॉयफ्रेंड (Classmate, boyfriend) के नाम पर मुस्लिम लड़कियां घूमती दिखाई देती हैं लड़कियों की इस आज़ाद रविश पर कोई ऐतराज़ या सवाल नहीं, अफसोस की बात तो यह है की मां बाप को ना जानने का होश है ना फिक्र और ना ही फुर्सत, उनको कौन समझाए?। जिन यूरोपी क़ौमों के नज़दीक शर्म और हया का कोई मफहूम ही नहीं है उनकी रस्म और आदत के अपनाने को फखर समझा जा रहा है जो अपनी औरतों और लड़कियों का गैर महरम और अजनबी मर्दों के साथ अकेले में मिलना, बातचीत करना, हाथ मिलाना, उनके साथ नाचना , सैर और तफरीह मे जाना जाइज़ समझते हैं वो अख़लाक़ ए आलिया से महरूम हैं । उन्हें कौन समझाये कि इस्लामी शान और शौकत का आफताब उस वक़्त भी दरख्शां था जब तरक्कियों की तमाम मंज़िलों में मुसलमान सब क़ौमो से आगे थे इस्लामी पर्दा उस वक़्त भी मौजूद था उस वक़्त भी मुस्लिम औरतें तमाम आलम में इज़्ज़त और बरतरी की मलका थीं,तलक़ीन और तक़रीर करती थीं, बुर्का और नकाब के साथ जंगों में हिस्सा लेती थीं फौज के लिए खाने पानी का बंदोबस्त और ज़ख्मियों की मरहम पट्टी करती थीं।

**इरतिदाद की कुछ खबरें और तरीका ए इरतिदाद:** दुनिया की मामूली सी दौलत चोरी करने के लिए अनगिनत लुटेरे है कायनात की अज़ीम नेमत "दौलत ए ईमान" के डाकुओं का क्या पूछना जिस मज़बूत इरादे के साथ इरतिदाद का तूफान तेज़ी के साथ

हमारे घरों की तरफ बढ़ रहा है इसका अंदाज़ा उन वाकियात से लगाया जा सकता है जो इस सिलसिले में पेश आ रहे हैं चुनांचे एक वाकिया मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा का है जहां पहले गैरमुस्लिम लड़के ने मुस्लिम लड़की को मोहब्बत के जाल में फंसाया फिर मज़हब तबदील करा कर बाद में उस का गला दबाकर मार दिया मामला इस तरह है कि "प्यार के नाम पर मुस्लिम लड़की रिज़वाना ने इस्लाम छोड़कर हिंदू धर्म इख्तियार किया उसके बाद गैरमुस्लिम लड़का सिद्धार्थ ने रिज़वाना का गला दबाकर हत्या कर दी। [Baseerat Online newspaper: 28 March 2021]

इरतिदाद का एक और वाकिया बिहार ज़िला खगड़िया का है,"जहां मज़हब तब्दील कर गैर मुस्लिम जवान से इश्क कर शादी करना महंगा पड़ गया जिसके बाद गैरमुस्लिम लड़के ने अफसाना से मोहब्बत का नाटक करके मज़हब तब्दील करा कर शादी की मगर शादी के बाद उसे अपनाने से इंकार कर दिया"।

5 फरवरी 2022 को सोशल मीडिया के ज़रिये एक वाक़िया सामने आया जिसमें वीडियो बयान के ज़रिये हरदोई की रहने वाली मुस्कान ने बताया कि साढ़े तीन साल पहले उसकी बरैली कैंट के रहने वाले एक गैर मुस्लिम लड़के अर्जुन गुप्ता से व्हाट्सप्प के ज़रिये दोस्ती हुई और ये दोस्ती मुहब्बत में बदल गयी फिर उस लड़के ने मुस्कान का धर्म परिवर्तन कराकर उससे शादी कर ली और अब उसका पति उसे छोड़कर फरार हो गया और वो दर दर ठोकरें खा रही है उसका कोई पुरसाने हाल नहीं है।

इरतिदाद के इसी तूफान में बहुत सारी लड़कियां फंसी हुई है जिसका कोई पुरसाने हाल नहीं। तरीका ए इरतिदाद कुछ इस तरह होता है कि पहले ये लोग हमदर्दी के नाम पर व्हाट्सप्प(Whatsapp), फेसबुक(Facebook), इंस्टाग्राम(Instagram), कॉलेज, स्कूल, कोचिंग और दीगर तरीक़ो से किसी मुसलमान लड़की से करीब होते हैं फिर मोहब्बत का फरेब देते हैं और शादी का वादा करते हैं फिर यौन शोषण (sexual harassment) का मरहला शुरू होता है इससे आगे मोहब्बत के फरेब में फंसा कर और जज़्बाती रंग दिखा कर अपने आप को करीब करके मज़हब छोड़ने यानी 'मुर्तद' होने पर आमादा किया जाता है और यही चीज़ इरतिदाद के रास्ते तक पहुंचाती है" बा अल्फाज़े

दीगर, गैर मुस्लिम लड़का और मुस्लिम लड़की एक दूसरे के करीब आते हैं आहिस्ता आहिस्ता यह कुर्बत मोहब्बत में और मोहब्बत हवस में बदल जाती है और इस हद तक आ जाती है कि वो शादी के बंधन में भी बंध जाते हैं और यही चीज़ इरतिदाद के दहाने ला खड़ा कर देती है।

इरतिदाद की इस लहर के असबाब क्या हैं? आइए जानने की कोशिश करते हैं और उनका हल भी ढूंढने की कोशिश करते हैं क्योंकि हालात का रोना रोने से कुछ नहीं होगा बल्कि उसके असबाब का ताक्कुब करते हुए उसकी इस्लाह ज़रूरी है।

## इरतिदाद के असबाब और अवामिल:

**(1) टीवी:** टीवी और ड्रामों के ज़रिए इस्लामी तशख़्ख़ुस को जिस तरह दुनिया के सामने पेश किया जा रहा है इस बात से सभी वाकिफ हैं टीवी और ड्रामों में यूरोपी गन्दी और खबीस तहज़ीब और तमद्दुन को दिखाया जाता है मुस्लिम लड़कियां अपनी ज़िन्दगी में उसे अपनाती हैं ये जानते हुए कि टीवी बगैरह के ज़रिए औरतों की तरक़्क़ी के नाम पर बुराई और बेहयाई को फरोग दिया जाता है और फहाशी आम हो रही है।

**(2) मिलाजुला निज़ाम ए तालीम:** मौजूदा वक्त में स्कूल की सतह से लेकर कॉलेज की छत तक मिला जुला निज़ाम ए तालीम का सिस्टम है जिसने इरतिदाद जैसे संगीन मामले को बेहतरीन और मज़बूत स्टेज फराहम किया है ऐसे मौके पर फितरी तौर पर गैर मुस्लिम लड़के और मुस्लिम लड़कियां एक दूसरे के करीब आ जाते हैं।

**(3) दीनी तालीम से दूरी**: हम कौन हैं?और यूरोपी क़ौमें कौन हैं? का फर्क ना कर पाना अफसोसनाक है, हम पैदाइश से दीने इस्लाम, अख़लाक़ ए आलिया, और ईमान की दौलत से दूर होते चले आए हैं, दुनिया की क़ौमों ने तालीम और तहज़ीब हम से पाई, उनके दिल और रूह वहशियाना रज़ाइल से मुलव्विस है जिसको ज़ाहिरी लिबास ने ढांप रखा है बावुजूद इस के उस की चकाचौंध में पूरी कौम चली जा रही है, नतीजा ये हुआ कि शरई अहकाम में गफलत बढ़ती चली गई। ज़ाहिर सी बात है ऐसी सूरत ए हाल में

राह से भटकना आम हो जाता है जो दीन व मज़हब के सिलसिले में शक में डालता है और मामला इरतिदाद तक पहुंच जाता है।

**(4)शादी में ताख़ीर [देरी करना]:** मुस्लिम लड़कियों के रास्ते से भटकने की एक वजह उनकी वक़्त पर शादियां न करना भी है मां बाप को चाहिए के जब लड़की जवान हो जाये तो जल्द से जल्द उसकी शादी करदें जिससे वो किसी गैर मुस्लिम की मुहब्बत के जाल में फंसने से बच सके। कुछ मां बाप सोचते हैं कि लड़की अच्छे से पढ़ ले और उसकी नौकरी लग जाये तब शादी करेंगे हालांकि नौकरी मिल जाना इतना ज़रूरी नहीं है जितना दीन और इज़्ज़त की हिफाज़त ज़रूरी है।

## फितना ए इरतिदाद रोकने के लिए कुछ तरीके :

खिदमते दीन के लिए तकरीर, तहरीर, तबलीग, तनज़ीम और तहरीक जैसे बहुत सारे ज़राए(System) हैं । अपनी काबिलियत और सलाहियत को परखते हुए ये सोचा जाये किस तौर पर उम्मत में अपना तआवुन पेश कर सकते हैं इसी तरह इरतिदाद की लहर को रोकने के लिए बहैसियत ए उम्मत हर फर्द खुसूसन उलमा , दानिशवर हज़रात, मज़हबी और मिल्ली तनज़ीमों को मैदानें अमल में ज़मीनी सतह पर आना होगा जिस के ज़रिए पूरी उम्मते मुस्लिमा खुसुसन हव्वा की बेटियों के दिलों की दुनिया में ऐसा इन्कलाब पैदा हो जिस से दिल इस्लामी अहकाम के आगे झुके, और मुबल्लिग के ज़हनो फिक्र में ये बात हमेशा ज़हन नशीं रहे दावती अमल जिस भी तरीके से हों ज़्यादा से ज़्यादा ज़मीनी सतह पर इसलाह की कोशिश हो और तरीका ए कार इस तरह हो सकते हैं.

(1) अगर इस्लाह की कोशिश एक तन्ज़ीमी तरीके से हो तो मज़हब की तब्दील को लेकर जो मुआमलात मुआशरे में हो रहे हैं उसके असल असबाब को लोगों के सामने लाया जाए कि जब तक मर्ज़ पता न चले तो इलाज बेकार है, उस के मुताल्लिक लोगों को और मुआशरे के शऊरमन्द लोगों को दीन की बातें बताई जाऐं कि दोनों जहाँ की कामयाबी सिर्फ दीने इस्लाम में हैं, मुस्लिम बच्चियों की ज़हनी और फिक्री तरबियत के लिए तरबीयती प्रोग्राम और व्रकशाप(workshop) मुनअकिद(Organize) किये जायें। इस

के ज़रिए दीनी शऊर बेदार किया जाये इसके लिए सोशल मिडिया का भी सहारा लिया जा सकता है क्योंकि कॉलेज और यूनिवर्सिटीज की बेशतर मुस्लिम लड़कियां सोशल मीडिया से जुड़ी हुई हैं।

(2) अगर इरतिदाद की रोकथाम की कोशिश दावत और तबलीग के ज़रिए हो तो मुबल्लिग़ की अपनी राय पर होता है कि हिकमत के साथ किस मिज़ाज और माहौल में तरीका ए कार मुफीद है?, इस काम के लिए एक इमाम मस्जिद के मिम्बर से लेकर मुस्लिम ख्वातीन के इज्तेमाओं तक इस्लाम की हक्कानियत को ख्वातीन में आम करे, हर मोहल्ले में हफ्ता वारी दीनी प्रोग्राम लड़कियों के लिए चलाएं और उनके अन्दर इस्लामी गैरत को बेदार करें जिस में शादी बियाह से लेकर ख़्वातीन के मुताल्लिक सारे मसाइल बयान करें क्योंकि राह से भटकने की सबसे बड़ी वजह दीनी शऊर का न होना है

(3) अगर ये कोशिश तकरीर के ज़रिए हो तो मसाजिद के इमाम मिम्बर पर, मदारिस के मुदर्रिस अपनी अपनी दर्सगाहों और खुतबा जलसों के स्टेज पर फितना ए इरतिदाद का तार्रूफ(Introduction) कराएं उस के खात्मे और इलाज पर रोशनी डालें। हया दारी, पाकदामनी और इसमत की हिफाज़त का जज़्बा और अकीदा ए तौहीद व रिसालत की अज़मत बयान करें।

(4) अगर ये कोशिश तहरीर के ज़रिए हो तो साहिबे कलम और माहिरीने दीनियात फितना ए इरतिदाद के मौज़ू पर मज़ामीन , किताबचे , और किताबें तहरीर फरमाएं, बेहतर किरदार बनने में मदद करने वाला इस्लामियाती लिटरेचर पढ़ने के लिए लड़कियों के वालिदैन को दिया जाए.

(5) अगर ये कोशिश एक वालिदैन की शक्ल में हो तो रोज़ाना दस मिनट इन उमूर पर सर्फ करें: ईमान से मुताअल्लिक चंद गोशों के ज़रिए अपने बच्चों को फिक्री तौर पर मज़बूत करने की कोशिश करें। इस्लाम की परदे जैसी तालीमात उनको सिखाएं इस से दीनी मिज़ाज और इस्लामी फिक्र की परवरिश होगी। जो लड़किया स्कूलों और कालेजों में पढ़ रही हैं उनकी दीनी तालीम व तरबियत और ज़हन साज़ी की भरपूर कोशिश की जाए उनकी आदत और अखलाक पर कड़ी नज़र रखी जाए.

बयान किये गए तरीको से इज्तेमाई तौर पर फितना ए इरतिदाद का खात्मा हो और ये कोशिश इस्लामी तालीमात और सोच के ज़ेरे असर हो तो इन्शा अल्लाह यकीनन इस से फायदा हासिल होगा और हमारी बेटियां इस फितने के असर से महफ़ूज़ रह सकती है बशर्ते कि ये कोशिश वक़्ती होने के बजाय देर पा हो और दावती अमल मुखलिसाना हो।

## हयादार और बेहतर मुआशरा कैसे बनायें?

(1) वालिदैन अपने बच्चों की तरबियत दीनी माहौल में करें, शुरू से ही अख़लाके हस्ना का दर्स दिया जाए उसके लिए ये बात बेहद ज़रूरी है कि खुद वालिदैन भी बा किरदार हों अच्छे अख़लाक के हामिल हों क्योंकि बच्चा देखकर ज़्यादा सीखता है और वालिदैन का किरदार औलाद को मुतास्सिर करता है।

(2) मां की गोद औलाद के लिए पहली दर्सगाह है इसलिए मां को चाहिए अपनी औलाद को अच्छी बातें सिखाए फालतू बातों से गुरेज़ करे, अक्सर लड़कियों के राह से भटकने की वजह उनकी मांए होती हैं।

(3) टीवी, ड्रामा, सीरियल्स बच्चों के लिए ज़हरे कातिल हैं इसमें बे हयाई के अलावा कोई तालीम नहीं दी जाती है। इसकी जगह पर बच्चों को इस्लामियत से ताल्लुक रखने वाला मवाद देखने को दिया जा सकता है जिसमें दुआ, नमाज़, कलमा वगैरह की तालीम होती है।

(4) क़ुरआने मजीद और सीरत ए रसूल ﷺ को लाज़िमी पढ़ाया जाए।

(5) बच्चों को अगर मोबाइल दिया जाए तो उस मोबाइल में कुछ प्रोटेक्शन एप्स(Protection Apps) भी डाउनलोड कर दी जाएं जिससे वो बच्चा जिन्सी अनारकी (Sexual Anarchy) से महफ़ूज़ रह सके। और वो यूट्यूब जो सिर्फ बच्चों के लिए खास तौर से तैयार किया गया है उसमें इंस्टॉल किया जाए।

(6) जब बच्चा 7 साल का हो जाए तो उसे नमाज़ का हुक्म दिया जाए और लड़कियों को नमाज़ के साथ-साथ हिजाब की आदत डलवाई जाए ताकि उनके ज़मीर में यह चीज़ अभी से शामिल हो जाए।

(7) जब बच्चा 10 साल का हो जाए तो उनके बिस्तर अलग कर दिए जाएं और उन्हें रिश्तो का लिहाज़ और महरम और गैर महरम में फर्क बताया जाए।

(8) 7 साल से 14 साल तक औलाद को गुलाम बनाकर रखा जाए उसमें उन्हें बक़दरे ज़रूरत सज़ा भी दी जा सकती है ताकि उन की तामीर अच्छे से हो सके।

(9) 14 साल से 21 साल तक उन्हें अपना दोस्त बनाया जाए ताकि वो अपनी परेशानियां किसी गैर के बजाए आपसे शेयर कर सकें। इस उम्र में लड़कों और लड़कियों का गलत राह इख्तियार करने का इमकान(Possibility) ज़्यादा होता है इसका एक सबब वालिदैन का उनसे कमज़ोर ताल्लुक भी है। वालिदैन अपनी ज़िंदगी में मसरूफ रहते हैं औलाद की तरफ नज़र नहीं करते और इसका नतीजा शर्मनाक होता है इसलिए ज़रूरी है कि अपनी औलाद को अपना दोस्त बनाया जाए ताकि वह भटकने से बच सकें।

(10)नौजवान लड़के और लड़कियों के मोबाइल फ़ोन पर पासवर्ड क्यूँकर है ये बात सोचना चाहिए सवाल करना चाहिए हफ्ते महीने में इत्तेफ़ाक़न मोबाइल फ़ोन चेक करना चाहिए कितने सिम कार्ड्स बच्चों के पास हैं? इसकी खबर होनी चाहिए रिचार्ज कहां से आ रहा है? लड़के लड़कियां कॉलेज के नाम पर कहाँ जा रहे हैं? इन सब की खबर होनी चाहिए

(11) मुस्लिम लड़कियों के गलत राह इख़्तियार करने का एक सबब उनकी सहेलियां भी होती हैं इसलिए वालिदैन को चाहिए के अपनी बेटियों की सहेलियों पर भी नज़र करें अगर बद किरदार लड़कियों से उनकी दोस्ती हो तो उनसे दूर रहने की तलक़ीन करें

(12) अगर आप इस उम्र तक अच्छी तरबियत कर देते हैं तो इन्शा अल्लाह आप की औलाद ज़रूर बा ज़रूर हया का पैकर बन जाएगी। इसके बाद अपनी औलाद का निकाह करके अपने हुक़ूक को पूरा करें।

दुआ है रब तआला इस फितने से पूरी उम्मते मुस्लिमा को महफूज़ फरमाए अहकामे इलाही और तालीमाते नबवी पर चलने की तौफीक अता फरमाए।आमीन

## सिर्फ पढ़ना नहीं गौरो फ़िक्र भी करना!

# तुम भी मारी जाओगी

पहले चाहत फिर निगाहों से उतारी जाओगी, आबरू भी जाएगी और तुम भी मारी जाओगी।

तुम फिरोगी दरबदर रुसवाई और ज़िल्लत के साथ, बेटियो! जब छोड़कर निस्बत हमारी जाओगी।

यह तो एक साज़िश है वरना तुम नहीं उनको कुबूल कल वही नफ़रत करेंगे आज प्यारी जाओगी।

जिस घड़ी दिल भर गया कोठे पे बेचेंगे तुम्हें, दाग लेकर होगी वापस और कुंवारी जाओगी।

जिसके दम पर घर से निकलीं कल वह जब देगा फरेब, सोच लो किस सम्त फिर तुम पांव भारी जाओगी।

इज़्ज़त व अज़मत गवाँ कर मुंह दिखाओगी किसे, करते-करते दुनिया से तुम आह व् ज़ारी जाओगी।

उतरेगा थोड़े दिनों में ही जवानी का नशा, ज़ुल्म की आग़ोश में जब बारी बारी जाओगी।

कोई मज़हब दे न पाएगा तुम्हें ऐसा हिसार, छोड़कर इस्लाम की जब पासदारी जाओगी।

है शरीयत ही तुम्हारी पासवां ऐ बेटियो! दामन ए इस्लाम में ही तुम संवारी जाओगी।

प्यारी बहनो इफ्फ़त व शर्म व हया अपनाओ तो, देखना फिर नूर ए हक़ से तुम निखारी जाओगी।

तुमको कुछ शिकवा था तो अपनों से ही कर देती बयां इतने पर क्या दूसरों की तुम अटारी जाओगी।

आह दोज़ख को खरीदा तुमने ईमां बेच कर, आह अब रोज़े जज़ा तुम बनके नारी जाओगी।

रोती है चश्मे फ़रीदी देखकर अंजामे बद, गर न संभलोगी तो लेने सिर्फ ख़्वारी जाओगी।

**[✍ फ़रीदी सिद्दीकी मिस्बाही मसक़त ओमान]**

---

**Published by:**

# तहरीक निज़ामे मुस्तफा

**www.nizamemustafa.in**

**✆ 9720315389, 9675801762, 8650251916**

**Bareilly Shareef [India]**